हिंदी (ऐच्छिक)

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नपत्र संख्या 29/1/1

खंड - 'ख'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल निडर, बिल्कुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होती है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, पर वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, ज़िन्दगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता।

ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम को झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेरा डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और ज़िंदगी का कोई मज़ा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने ज़िंदगी को ही आने से रोक रखा है। ज़िंदगी से, अंत में हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं। पूँजी लगाना ज़िंदगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिसके सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं।

(क) साहस की ज़िंदगी जीने वालों में ऐसी कौन सी विशेषताएँ हैं जिनके कारण उन्हें अन्य लोगों से अलग किया जा सकता है? 2

(ख) "ज़िंदगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है" - कैसे ? स्पष्ट कीजिए। 2

(ग) कैसा आदमी सुखी नहीं हो सकता और क्यों? 2

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए - ''ज़िंदगी से, अंत मे हम उतना ही पाते हैं, जितनी कि उसमें पूँजी लगाते हैं।'' 2

(ङ) जीवन में साहस क्यों अपेक्षित है? 2

(च) गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(छ) गद्यांश में क्या संदेश दिया गया है? संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। 1

(ज) मिश्र वाक्य में बदलिए - जनमत की उपेक्षा कर जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है। 1

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए - सकुशल, व्यावहारिक। 1

(ञ) विशेषण बनाइए - साहस, क्रांति। 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×5 = 5

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जल कर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी।

यह समाधि, यह लघु समाधि है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीला स्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की।।

यही कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला-सी।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर पड़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी।।

बढ़ जाता है मान वीर का

रण में बलि होने से।

मूल्यवती होती सोने की

भस्म यथा सोने से।।

रानी से भी अधिक हमें अब

यह समाधि है प्यारी।

यहाँ निहित है स्वतंत्रता की

आशा की चिनगारी।।

इससे भी सुन्दर समाधियाँ

हम जग में हैं पाते।

उनकी गाथा पर निशीथ में

क्षुद्र जन्तु ही गाते।

पर कवियों की अमर गिरा में

इसकी अमिट कहानी।

स्नेह और श्रद्धा से गाती

है वीरों की बानी।।

(क) प्रस्तुत काव्यांश में किसकी समाधि का उल्लेख किया गया है? उसे अंतिम लीला स्थली क्यों कहा है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिए - 'यहीं कहीं पर बिखर गई वह भग्न विजय-माला-सी।'

(ग) व्यक्ति का मान कब बढ़ जाता है?

(घ) इससे भी सुंदर समाधियाँ होने पर भी यह समाधि विशेष क्यों बताई गई है?

(ङ) रानी से भी अधिक उसकी समाधि प्रिय होने का कारण आपके विचार से क्या हो सकता है?

अथवा

पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

पुस्तकों में है नहीं, छापी गई इसकी कहानी,

हाल इसका ज्ञात होता है न औरों की जुबानी,
अनगिनत राही गए इस राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर, छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी, पंथ का अनुमान कर ले!
पूर्व चलाने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

है अनिश्चित किस जगह पर, सरित-गिरि-गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित किस जगह पर, बाग-बन सुंदर मिलेंगे,
किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है अनिश्चित, कब सुमन, कब कंटकों के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएँगे, मिलेंगे कौन सहसा,
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा तू न, ऐसी आन कर ले!
पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले!

(क) चलने से पूर्व राह की पहचान करने की बात क्यों कही गई है?

(ख) इस राह पर अनेक राहगीर अपने पैरो की निशानियाँ छोड़ गए - इसका भाव स्पष्ट कीजिए।

(ग) जीवन यात्रा के मार्ग में 'सुमन' और 'कंटक' से क्या अभिप्राय है?

(घ) ''किस जगह यात्रा खत्म हो जाएगी'' कवि के इस कथन का क्या आशय है?

(ड.) जीवन में क्या-क्या अनिश्चितताएँ बताई गई हैं?

खंड - 'ख'

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 400 शब्दों में निबंध लिखिए :

(क) कमरतोड़ महँगाई

(ख) साम्प्रदायिकता की समस्या

(ग) मेरी मेट्रो मेरी शान

(घ) राष्ट्रमंडल खेलों में भारत की उपलब्धियाँ

4. कल्पना कीजिए कि आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना अध्ययन पूरा कर लिया है और किसी प्रसिद्ध अखबार में पत्रकार-पद के लिए आवेदन भेजना है। अपने स्ववृत्त (बायोडेटा) सहित आवेदन पत्र लिखिए। 5

अथवा

महानगरी में दिन-प्रतिदिन बढ़ती अपराध प्रवृत्तियों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और इससे निपटने के लिए कुछ सुझाव भी दीजिए।

5. फ़ीचर क्या है? एक अच्छे फ़ीचर की किन्हीं चार विशेषाताओं पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

रेडियो और टेलीविजन समाचारों की भाषा-शैली की विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए : $1\times5 = 5$

(क) उलटा पिरामिड शैली से क्या तात्पर्य है?

(ख) भारत में प्रथम छापाखाना कब और कहाँ खुला था?

(ग) विशेष लेखन क्या होता है?

(घ) इंटरनेट पत्रकारिता आजकल बहुत लोकप्रिय क्यों हैं?

(ङ) समाचार लेखन के छह 'ककार' कौन-कौन से हैं?

खंड - 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

चोट खाकर राह चलते
होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे,
ठग-ठाकुरों ने रात लूटे,
कंठ रुकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।

भर गया है ज़हर से

संसार जैसे हार खाकर,

देखते हैं लोग लोगों को,

सही परिचय न पाकर,

बुझ गई है लौ पृथा की,

जल उठो फिर सींचने को

अथवा

जननी निरखति बान धनुहियाँ।

बार-बार उन नैननि लावति प्रभुजू की ललित पनहियाँ।।

कबहुँ प्रथम ज्यों जाइ जगावति कहि प्रिय बचन सवारे।

''उठहु तात! बलि मातु बदन पर, अनुज सखा सब द्वारे''।।

कबहुँ कहति यों ''बड़ी बार भइ जाहु भूप पहँ भैया।

बंधु बोलि जेंइय जो भावै गई निछावरि मैया''।।

कबहुँ समुझि बनगमन राम को रहि चकि चित्र लिखी-सी।

तुलसीदास वह समय कहे तें लागति प्रीति सिखी-सी।।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : 3+3 = 6

(क) 'तोड़ो' कविता में पत्थर और चट्टानें किसके प्रतीक हैं? कवि उन्हें तोड़ने का आह्वान क्यों करता हैं?

(ख) 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए बताइए कि कवि ने उसे स्नेहभरा, गर्वभरा और मदमाता क्यों कहा है?

(ग) बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है और उसका इस शहर पर क्या प्रभाव पडता है?

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : 3+3 = 6

(क) लघु सुरधुन-से पंख पसारे- शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए - समझ नीड़ निज प्यारा।

(ख) यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाउ।

मकु तेहिं मारग होइ परौं कंत धरैं जहँ पाउ।।

(ग) तेलनि तूलनि पूँछ जरी न जरी लंक जराइ जरी।।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 6

नाम इसलिए बड़ा नहीं है कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज-सत्य। नाम उस पद को कहते हैं जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सैंक्शन' कहा करते हैं।

अथवा

दूर जल-धारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानो उसने अपना सारा अहम् त्याग दिया है, उसके अंदर 'स्व' से जनित कोई कुंठा शेष नहीं है, वह शुद्ध रूप से चेतन स्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है।

11. निम्नलिखित प्रश्नो मे से किंन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4+4 = 8

(क) 'संवदिया' के चरित्र की क्या विशेषताएँ हैं और गाँववालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

(ख) रामचंद्र शुक्ल ने चौधरी प्रेमघन के व्यक्तित्व के किन पहलुओं को उजागर किया है? स्पष्ट कीजिए ।

(ग) 'धर्म का रहस्य जानना वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है।' 'घड़ी के पुर्जे' पाठ के कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्कयुक्त उत्तर दीजिए।

12. विष्णु खरे अथवा विद्यापति के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं में से किन्हीं दो का उल्लेख कीजिए। 6

अथवा

भीष्म साहनी अथवा ब्रजमोहन व्यास के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन के उत्तर दीजिए : 3+3+3 = 9

(क) 'आरोहण' कहानी में पत्थर की जाति से लेखक का क्या आशय है? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए।

(ख) ''हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है।'' 'अपना मालवा - खाऊ - उजाडू सभ्यता में' पाठ के आधार पर इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) सूरदास की रूपयों से भरी पोटली भैरों के पास देख कर जगधर को कैसा लगा? उसकी मनः स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में पाठ के आधार पर कीजिए।

(घ) 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर उस स्मृति पर प्रकाश डालिए जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है।

14. 'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के आधार पर सूरदास के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 6

अथवा

'पहाड़ों की चढ़ाई में भूप दादा का कोई जवाब नहीं' - कथन के आलोक में उसके चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं पर 'आरोहण' कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए।

प्रश्नपत्र संख्या 29/1

खंड - 'ख'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

साधारणतः सत्य का अर्थ सच बोलना मात्र ही समझा जाता है, परन्तु गांधी जी ने व्यापक अर्थ में 'सत्य' शब्द का प्रयोग किया है। विचार में, वाणी में और आचार में उसका होना ही सत्य माना है। उनके विचार में जो सत्य को इस विशाल अर्थ में समझ ले उसके लिए जगत् में और कुछ जानना शेष नहीं रहता। परन्तु इस सत्य को पाया कैसे जाए? गांधी जी ने इस सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए हैं - एक के लिए जो सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। इसमें घबराने की बात नहीं है। जहाँ शुद्ध प्रयत्न है वहाँ भिन्न जान पड़ने वाले सब एक ही पेड़ के असंख्य भिन्न दिखाई देने वाले पत्तों के समान है। परमेश्वर ही क्या हर आदमी को भिन्न दिखाई नहीं देता? फिर भी हम जानते हैं कि वह एक ही है। पर सत्य नाम ही परमेश्वर का है, अतः जिसे जो सत्य लगे तदनुसार वह बरते तो उसमें दोष नहीं। इतना ही नहीं, बल्कि वही कर्तव्य है। फिर उसमें भूल होगी भी तो सुधर जाएगी, क्योंकि सत्य की खोज के साथ तपश्चर्या होती है अर्थात् आत्मकष्ट-सहन की बात होती है, उसके पीछे पर मिटना होता है, अतः उसमें स्वार्थ की तो गंध तक भी नहीं होती। ऐसी निःस्वार्थ खोज में लगा हुआ आज तक कोई अंत पर्यन्त गलत रास्ते पर नहीं गया। भटकते ही वह ठोकर खाता है और सीधे रास्ते पर चलने लगता हैं।

ऐसे ही अहिंसा वह स्थूल वस्तु नहीं है जो आज हमारी दृष्टि के सामने है। किसी को न मारना, इतना तो है ही। कुविचार मात्र हिंसा है, उतावली हिसां है। मिथ्या भाषण हिंसा है। द्वेष हिंसा है। किसी का बुरा चाहना हिंसा है। जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है, उस पर कब्ज़ा रखना भी हिंसा है।

इतना हमें समझ लेना चाहिए कि अहिंसा के बिना सत्य की खोज असम्भव है। अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख। इसमें किसे उलटा कोई कहें किसे सीधा। फिर भी अहिंसा को साधन और सत्य को साध्य मानना चाहिए। साधन अपने हाथ की बात है। हमारे मार्ग में चाहे जो भी संकट आए, चाहे जितनी हार होती दिखाई दे - हमें विश्वास रखना चाहिए कि जो सत्य है वही एक परमेश्वर है। जिसके साक्षात्कार का एक ही मार्ग है और एक ही साधन है - वह है अहिंसा, उसे कभी न छोड़ेंगे।

(क) गांधीजी के अनुसार सत्य का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) जो एक के लिए सत्य है, वह दूसरे के लिए असत्य हो सकता है। इस बात को गांधीजी ने कैसे समझाया है? 2

(ग) गांधीजी ने किन बातों एवं व्यवहारों को हिंसा माना है? 2

(घ) सत्य की खोज में लगा हुआ व्यक्ति ग़लत रास्ते पर क्यों नहीं जा सकता? 2

(ड.) आशय स्पष्ट कीजिए : 2
''अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख।''

(च) अहिंसा सत्य की प्राप्ति में साधन कैसे है? 2

(छ) उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक बताइए। 1

(ज) उतावली हिंसा है। मिथ्या भाषण हिसां है। द्वेष हिंसा है। 1
उपर्युक्त वाक्यों को एक सरल वाक्य में बदलिए।

(झ) उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए - निःस्वार्थ, व्यापक। 1

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 1×5 = 5

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;

प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।

हैं बँधे नर के करों में वारि, विद्युत्, भाप,

हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।

है नहीं बाक़ी कहीं व्यवधान,

लाँघ सकता नर सरित्, गिरि, सिंधु एक समान।

शीश पर आदेश कर अवधार्य,

प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य;

मानते हैं हुक्म मानव का महा करुणेश,

और करता शब्दगुण अंबर वहन संदेश।

नव्य नर की मुष्टि में विकराल,

हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण विकराल।

यह प्रगति निस्सीम! नर का यह अपूर्व विकास!

चरण-तल भूगोल! मुट्ठी में निखिल आकाश!

किन्तु है, बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,

छूट कर पीछे गया है रह हदय का देश;

मोम-सी कोई मुलायम चीज़

ताप पाकर जो उठे मन में पसीज-पसीज।

(क) आधुनिक युग को कवि ने विचित्र और नवीन क्यों कहा है?

(ख) 'कहीं कोई रुकावट शेष नहीं रही' - इसकी पुष्टि में कवि ने क्या तर्क दिया है?

(ग) मानव द्वारा की गई वैज्ञानिक प्रगति के अद्‌भुत विकास को देखकर भी कवि संतुष्ट क्यों नहीं है?

(घ) 'प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य' - प्रमाण में एक उदाहरण दीजिए।

(ड.) मन में रहने वाली 'मोम-सी कोई मुलायम चीज़' क्या हो सकती है? उसका अभाव क्यों दिखाई पड़ता है?

अथवा

हम प्रचंड की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल।

हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर, अचल।

हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं।

हम हैं शांति-दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।

वीरप्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं।

गंगा, यमुना, हिंद महासागर के हम ही रखवाले हैं।

तन-मन-धन तुम पर कुर्बान,

जियो, जियो जय हिन्दुस्तान!

हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण।

जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन।

एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल।

जिनता कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल।

थर-थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर।

स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर।

हम उन वीरों की संतान,

जियो, जियो जय हिन्दुस्तान।

(क) कविता में 'हम' के रूप में कौन अपना परिचय दे रहे हैं? वे अपने आपको 'नई किरण' क्यों कह रहे हैं?

(ख) भारतीय अपना सर्वस्व किस पर न्योछावर करना चाहते हैं और क्यों?

(ग) 'वीरप्रसू' किसे कहा गया है और क्यों?

(घ) भाव स्पष्ट कीजिए-

'जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन'

(ड.) काव्यांश के आधार पर हमारे पूर्वजों के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

खण्ड ख

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए : 10

(क) खेल-जगत् में भारत की उपलब्धियाँ

(ख) भारत का प्राकृतिक सौंदर्य

(ग) पुस्तकालय

(घ) टूटता संयुक्त परिवार

4. यातायात-व्यवस्था को सुधारने के अभियान में आप ग्रीष्मावकाश में अपनी सेवाएं अर्पित करना चाहते हैं। इस आशय का पत्र पुलिस-अधीक्षक, यातायात को लिखकर सूचित कीजिए। 5

अथवा

खाद्य पदार्थों में मिलावट की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। इसके निराकरण के कुछ उपाय भी सुझाइए।

5. हमारे दैनिक जीवन में मुद्रित माध्यमों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए उनकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 5

अथवा

रेडियो के लिए समाचार-लेखन में क्या-क्या सावधानियाँ अपेक्षित हैं? विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(क) समाचार-लेखन के 'छह ककार' कौन से हैं?

(ख) समाचार किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्तम्भ-लेखन क्या होता है? समझाइए।

(घ) वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय किसे दिया जाता है?

(ङ) उलटा पिरामिड-शैली से क्या तात्पर्य हैं?

खण्ड ग

7. निम्नलिखित काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।

बिरह सैचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।।

रक्त ढरा माँसू गरा; हाड़ भए सब संख।

धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।।

अथवा

जो है वह सुगबुगाता है

जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ

आदमी दशाश्वमेध पर जाता है

और पाता है घाट का आखिरी पत्थर

कुछ और मुलायम हो गया है

सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में

एक अजीब-सी नमी हैं

और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है

भिखारियों के कटोरों का निचाट ख़ालीपन।

8. निम्नलिखित प्रश्नों मे से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : 3+3 = 6

(क) सत्य की पहचान हम कैसे करें? 'सत्य' कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'दीप अकेला' कविता में ''यह अद्वितीय - यह मेरा - यह मैं स्वयं विसर्जित'' - पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

(ग) ''मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ'' कहकर भरत राम के स्वभाव की किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रहे हैं?

9. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए : 3+3 = 6

(क) सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी।

निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जग जीव जतीन की छूटी चटी।।

(ख) हेम-कुंभ ले उषा सवेरे- भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊँघते रहते जब - जगकर रजनी भर तारा।।

(ग) भर गया है ज़हर से

संसार जैसे हार ख़ाकर,

देखते हैं लोग लोगों को,

सही परिचय न पाकर,

बुझ गई है लौ पृथा की,

जल उठी फिर सींचने को।

10. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 6

स्वातंत्र्योर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह नहीं है कि शासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पश्चिम की देखादेखी और नक़ल में योजनाएँ बनाते समय प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच का नाज़ुक सन्तुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है - इस ओर हमारे पश्चिम-शिक्षित सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया। हम बिना पश्चिम को मॉडल बनाए, अपनी शर्तों और मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं, कभी इसका ख़याल भी हमारे शासकों को आया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता।

अथवा

अभी भी मानव-सम्बन्धों के पिजड़े में भारतीय जीवन-विहग बंदी है। मुक्त गगन में उड़ान भरने के लिए वह व्याकुल है। लेकिन आज भारतीय जन-जीवन संगठित प्रहार करके एक के बाद एक पिंजड़े की तीलियाँ तोड़ रहा है। धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले उन्हें मज़बूत कर रहे हैं, जो भारत भूमि में जन्म लेकर और साहित्यकार होने का दंभ करके मानव-मुक्ति के गीत गाकर भारतीय जन को पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते हैं।

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : 4+4 = 8

(क) ''मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है, इधर बाँधो, उधर लग जाती है।'' कथन के आधार पर 'दूसरा देवदास' और पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

(ख) 'शेर' कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए।

(ग) फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने 'बड़ी बहुरिया की पीड़ा को, उसके भीतर के हाहाकर को संवदिया के माध्यम से अपनी पूरी सहानुभूति प्रदान की है।'' कथन के आलोक में बड़ी बहुरिया का चरित्रांकन कीजिए।

12. विद्यापति अथवा रघुवीर सहाय के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी किन्हीं दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 6

अथवा

रामचन्द्र शुक्ल अथवा भीष्म साहनी के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए : 3+3+3 = 9

(क) 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी देते है', कैसे ? 'बिस्कोहर की माटी' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

(ख) सब जगह लगी बरसात की झड़ी का मालवा के जन-जीवन पर क्या असर पड़ता है?

(ग) भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई?

(घ) रूपसिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूपसिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया? 'आरोहण' पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

14. 'आरोहण' कहानी के आधार पर भूप दादा के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि उनके जीवन से क्या प्रेरणा मिलती है।

अथवा

'तो हम भी सौ लाख बार कमाएँगे' - इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

अंक योजना - हिंदी (ऐच्छिक)

सामान्य निर्देश :

1. अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न किंतु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएं।

2. मूल्यांकन करने वाले परीक्षकों के साथ जब तक प्रथम दिन वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से अंक-योजना पर भली-भाँति आद्योपांत विचार-विनियम नहीं हो जाता, तब तक मूल्यांकन आरंभ न कराया जाए।

3. मूल्यांकन अपनी निजी व्याख्या के अनुसार न करके अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए।

4 प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दाईं ओर अंक दिए जाएँ। बाद में उपभागों के इन अंकों का योग बाईं ओर के हाशिए में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।

5. यदि प्रश्न का कोई उपभाग नहीं है तो उस पर बाईं ओर ही अंक देकर उन्हें गोलाकृत कर दिया जाए।

6 यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का अतिरिक्त उत्तर भी लिख दिया है तो उस उत्तर पर अंक दिए जाएं जिसे पहले लिखा गया हो।

7. संक्षिप्त, किन्तु उपयुक्त विवेचन के साथ प्रस्तुत किया गया बिंदुवत उत्तर विस्तृत विवेचन की अपेक्षा अच्छा माना जाएगा। ऐसे उत्तरों को उचित महत्व देने की अपेक्षा है।

8. बार-बार की गई एक ही प्रकार की अशुद्ध वर्तनी पर अंक न काटें।

9. अपठित गद्यांश और काव्यांश के प्रश्नों में परीक्षार्थियों की समझ, बोध क्षमता और ग्रहण शीलता का परीक्षण किया जाता है, अतएव इनके उत्तरों में अभिव्यक्तिगत योग्यता को अधिक महत्त्व न दिया जाए जिससे परीक्षार्थियों को अकारण हानि हो।

10. मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने - 0 से 100 का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात् परीक्षार्थियों ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे शत-प्रतिशत अंक दिए जाएं।

प्रश्न-पत्र-संख्या 29/1/1

1 क अपठित गद्यांश के उत्तर :– 15 अंक

- निडर, बेखौफ़
- जनमत की परवाह न करने वाला।
- अपनी दुनिया में मस्त।
- ज़िंदगी को चुनौती के रूप में स्वीकार करने वाला।

(कोई दो) 2

ख
- कष्टों का सामना करना पड़ता है।
- कठिनाइयां/मुश्किलें कदम–कदम पर दिखाई देती हैं। 2

ग
- जो कष्टों का, मुसीबतों का सामना न करे।
- जो जीवन को चुनौती के रूप में स्वीकार न करे।
- क्योंकि खतरों से डरने के कारण उसने जीवन को आने से ही रोक रखा है। 2

घ पूंजी लगाने का तात्पर्य है –
- जीवन में संघर्ष और चुनौतियों का सामना करना।
- हम चुनौतियों को जितना स्वीकारेंगे उतना ही जीवन का आनंद उठाएंगे। 2

ङ
- साहस जीवन जीने की शक्ति प्रदान करता है।
- साहस से काम न लेने वाला सुखी नहीं हो सकता 2

च उपयुक्त शीर्षक –
- हिम्मत और ज़िंदगी।
- साहसी जीवन

(कोई अन्य उपयुक्त शीर्षक) 2

छ गद्यांश में संदेश दिया गया है कि –
- जीवन में संघर्षों का सामना करना चाहिए। 1

ज मिश्र वाक्य –
- जो व्यक्ति जनमत की उपेक्षा करता है वह दुनिया की असली ताकत होता है। 1

झ उपसर्ग – 'स'

प्रत्यय – 'इक' 1

ञ विशेषण :–

1. साहसिक, साहसी

2. क्रांतिकारी

2 क 1. यह समाधि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की है। 5 अंक

2. अंतिम लीला–स्थली इसलिए कहा गया है कि यहां उनकी जीवन–लीला समाप्त हुई थी। 1

ख इसी स्थल पर झांसी की रानी ने अंतिम श्वास लिए थे। उनका न रहना एक सुंदर माला के टूटकर बिखरने–जैसा था। 1

ग व्यक्ति का मान देश के लिए अथवा किसी महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए बलिदान देने पर बढ़ जाता है। 1

घ झांसी की रानी की; इसलिए प्रथम स्वतंत्रता के युद्ध की अमर सेनानी रानी लक्ष्मीबाई के अमर बलिदान की याद दिलाते हैं। 1

ङ यह समाधि आज भी देशप्रेम और बलिदान की प्रेरणा देती है। 1

अथवा

क चलने से पूर्व राह की पहचान करना जीवन यात्रा को सरल सुगम बना देगा। मार्ग की बाधाओं का अनुमान लगाया जा सकेगा। कष्टमय होगा या दुखद, यह जानना अनिवार्य है। ½+½

ख हमारे पूर्वज इस राह पर अपनी स्मृतियां छोड़ गए हैं। अपने क्रियाकलापों से हमारा मार्गदर्शन कर गए हैं। ½+½

ग अमन : सुख–सुविधाएँ, कंटक : विघ्न–बाधाएँ ½+½

घ अनुमान लगाना कठिन है कि उसकी जीवन लीला कब, कहाँ और कैसे समाप्त हो जाएगी अर्थात् जीवन अनिश्चित है। 1

ङ जीवन की अनिश्चितताएँ – ½+½

1. कौन,कब, कहाँ, कैसे मिलेंगे या छूट जाएँगे।

2. जीवन–लीला कब समाप्त हो जाएगी।

3. जीवन में सुख–दुख के क्षण भी अनिश्चित हैं।

खंड – ख

3 निबंध का अंक–विभाजन इस प्रकार है :– 10 अंक

1.	भूमिका / प्रारंभ –	1
2.	विषय वस्तु का प्रतिपादन –	5
	(इसमें विचारों की क्रमबद्धता, सुसंबद्धता,	
	मौलिकता आदि पर ध्यान दिया जाए)	
3.	उपसंहार –	1
4.	विषयानुरूप भाषा शैली, –	1
	शुद्धता आदि	2

4 पत्र का अंक विभाजन इस प्रकार है :– 5 अंक

पत्र–प्रारंभ की औपचारिकताएं	–	1
विषयवस्तु का प्रतिपादन	–	2
पत्र समापन की औपचारिकताएं	–	1
भाषा–शुद्धता	–	1

5 फ़ीचर : एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। इसका उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ उनका मनोरंजन करना भी है। 5 अंक

एक अच्छे फ़ीचर की विशेषताएँ:–

(i) इसमें वस्तुनिष्ठता और तथ्यों की शुद्धता पर विशेष ध्यान

(ii) फ़ीचर की लेखन–शैली समाचार लेखन शैली से भिन्न – काफी हद तक कलात्मक शैली।

(iii) फ़ीचर लेखन की भाषा सरल, रूपात्मक, आकर्षक और हृदयस्पर्शी।

(iv) इसमें अन्य समस्याओं की तरह शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं।

(v) एक अच्छे फ़ीचर के साथ फोटो, रेखाकंन, ग्राफ़िकस होना जरूरी।

(किंही चार का उल्लेख) 4

अथवा

रेडियो व टेलीविजन समाचारों की भाषा–शैली की विशेषताएँ

(i) जो सभी को आसानी से सहमझ आ जाए, लेकिन यह ध्यान रहे कि भाषा की गरिमा नष्ट न हो।

(ii) भाषा सरल, सम्प्रेषणीय और प्रभावी हो।

(iii) वाक्य सरल, सीधे और स्पष्ट हों

(iv) शब्द सरल हों, किंतु, परंतु, यथा, तथा, निम्नलिखित, उपर्युक्त, क्रमांक आदि शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

(v) मुहावरों का प्रयोग करते समय ध्यान रखा जाए कि भाषा बोझिल न बने, आम बोलचाल के मुहावरे प्रयुक्त हों।

6 क सबसे पहले महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले लिखा जाता है। तत्पश्चात घटते हुए महत्वपूर्ण अन्य तथ्यों को लिखा जाता है और फिर निष्कर्ष या समापन होता है। 5 अंक 1

ख प्रथम छापाखाना सन् 1556 में गोवा में खुला था। ½+½

ग किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन। विशेष लेखन के तहत रिपोर्टिंग के अलावा उस विषय या क्षेत्र विशेष पर फीचर, टिप्पणी, साक्षात्कार, लेख, समीक्षा और स्तंभ लेखन भी आता है। 1

घ इंटरनेट पत्रकारिता में प्रिंट माध्यम, रेडियो, टी.वी., पुस्तक, सिनेमा, पुस्तकालय के सभी गुण विद्यमान हैं। समाचारों का संप्रेषण, पुष्टि, सत्यापन आदि तत्काल किया जाता है।

ङ समाचार लेखन के छह ककार हैं : किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छह सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है : क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहां हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ? इस–क्या, किसके (या कौन), कहां, कब, क्यों और कैसे–को छह ककारों के रूप में भी जाना जाता है। 1

7 सप्रसंग व्याख्या : अंक विभाजन – 8 अंक

- कवि और कविता का नामोल्लेख 1
- पूर्वापर संबंध 1
- व्याख्येय बिंदुओं का स्पष्टीकरण 4
- शिल्पगत विशेषताएं 2
- भाषा–शैली

- **कवि** – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- **कविता** – 'गीत गाने दो मुझे'
- **प्रसंग** – कवि ने उस समय की ओर संकेत किया है जब कवि व्यक्ति संघर्ष करते–करते थक–हार गया है।
- **व्याख्येय बिंदु** –

– जीवन मार्ग पर चलते हुए जीना कठिन।

– सहारों/आधारों को ठगों ने लूट लिया।

– मृत्यु समीप देख कंठ अवरुद्ध।

– संसार से प्रेम सद्भावना, करुणा, मैत्री सब कहीं दूर चले गए।

– धरती पर हाहाकार।

– निराशा के घोर अंधकार में परस्पर बेरुखी में भी कवि गीत गाकर आशा का संचार करना चाहता है।

- **शिल्पगत विशेषताएं/विशेष** –

– 'ठग–ठाकुरों' – शोषक वर्ग का प्रतीक

– अनुप्रास अलंकार

– निराशा में आशा की लौ लगाने की बात अद्भुत ढंग से कही गई है।

– खड़ी बोली

अथवा

- **कवि** – तुलसीदास
- **कविता** – 'पद' (गीतावली)
- **प्रसंग** – राम के वन गमन पर माता कौशल्या की हृदय वेदना का मार्मिक वर्णन। राम की वस्तुओं को देखकर दुखी होना।
- **व्याख्येय बिंदु** –

– राम के धनुष–बाण को देखती हैं।

– बालक राम की सुंदर व छोटी–छोटी जूतियों को हृदय व नयनों से लगाती हैं।

– राम को प्रातः जगाना व राजा दशरथ के पास भेजना आदि .....।

– भावावेश में राम–गमन भूल जाती हैं।

– वस्तुस्थिति समझ में आने पर चित्र के समान भावशून्य–सी खड़ी रह जाती है।

– मानो प्रेम दीवानी मोरनी सी।

• **शिल्पगत विशेषताएँ / विशेष –**

– राम के वियोग में माँ कौशल्या की मनःस्थिति।

– स्मृति बिंब

– ब्रजभाषा

– वात्सल्य रस

8 क किंही दो के उत्तर अपेक्षित – 3+3 = 6 अंक

– कवि चट्टानों, ऊसर और बंजर भूमि को खेती के योग्य उपजाऊ बनाने का पक्षधर है, यही धरती की सार्थकता।

– ऐसे ही मन की खीज व ऊब को दूर कर मन में सृजन की भूमि, नए विचारों को लाना आवश्यक है।

ख उस अस्मिता का प्रतीक है जिसमें लघुता में भी ऊपर उठने की गर्वभरी व्याकुलता है। उसमें स्नेह रूपी तेल भरा है। वह अकेला होते हुए भी एक आलोक स्तंभ के समान है जो सबको प्रकाश देगा।

ग – बसंत का आगमन अचानक, गलियों–मोहल्लों में धूल भरे बवंडर उठते हैं।

– गंगा किनारे बने घाटों, मंदिरों आदि में लोगों की उमड़ी भीड़, भिखारियों को पैसे दे – कटोरों को भरती है।

– कटोरों में पैसों का आना भिक्षुकों के लिए बसंत आगमन है।

9 किन्हीं दो का काव्य – सौंदर्य 3+3 = 6 अंक

अंक विभाजन – भाव सौंदर्य – 1½

काव्य सौंदर्य – 1½ 3

ग • 'कार्नेलिया का गीत' में जयशंकर प्रसाद ने भारत के प्रातः कालीन सौंदर्य का अद्‌भुत चित्रण किया है। सुबह–सुबह छोटे पंखों को पसारे उड़ते पक्षी इंद्रधनुष–से प्रतीत होते हैं। भारत भूमि सभी की आश्रय–स्थली है। लोगों में करूणा, दया, सहानुभूति है।

- संस्कृतनिष्ठ भाषा, माधुर्य गुण, कोमल–कांत पदावली, मनोहारी प्रकृति–चित्रण, उपमा, अनुप्रास, रूपक अलंकार।

ख – फागुन मास में जायसी की विरहिणी नायिका नागमती का वियोग – वर्णन। वह पति वियोग में तिल–तिल जलकर भस्म बनना चाहती है। वायु को उस भस्म को उड़ाकर वहां बिछाने को कहती है जहाँ उसके परदेसी पति के पाव पड़ें।

– पति का स्पर्श पाने की अभिलाषा।

– वियोगजन्य विरह की चरमसीमा।

– अवधी भाषा, वियोग श्रृंगार रस।

ग – मंदोदरी रावण को राम के प्रताप की जानकारी देती हैं। तुमने हनुमान की पूंछ में रुई और तेल लगाकर उसे जलाना चाहा, पर वह नहीं जली और रत्नों से जड़ी लंका जल गई।

– राम की प्रशंसा के बहाने रावण की निंदा। यमक, अनुप्रास अलंकार, ओज गुण, ब्रजभाषा, वीर रस।

10 गद्यांश की व्याख्या का अंक विभाजन 3+3 = 6 अंक

लेखक व पाठ का नामोल्लेख	–	½+½
पूर्वापर संबंध	–	1
व्याख्या–मुख्य बिंदुओं की व्याख्या	–	4

शैली, सौष्ठव, विशेष कथन

नाम इसलिए ..... कहा करते हैं।

- **लेखक** – हजारी प्रसाद द्विवेदी
- **लेख** – 'कुटज'

कुटज – हिमालय पर्वत की चोटियों में उगने वाला पौधा, पौधे के बहाने नाम के महत्व की चर्चा

- **व्याख्या** – रूप और नाम दोनों भिन्न एक व्यक्ति सत्य, दूसरा समाज–सत्य नाम परसमाज की मुहर अर्थात् – सोशल सैक्शल'–अतः 'नाम' रूप से बड़ा। आदि भाव स्पष्ट करना अपेक्षित।
- **विशेष** – तत्सम, तर्कपूर्ण शैली, नाम की महत्ता का युक्तिसंगत उल्लेख।

अथवा

- **लेखिका** – ममता कालिया
- **कहानी** – 'दूसरा देवदास'

  हर की पौड़ी पर गंगा में नहाते किसी एक सैलानी का चित्रण।
- **व्याख्या** – सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े उस व्यक्ति की विनीत, आत्मविभोर, अहम्–त्याग से शुद्ध, आत्माराम, निर्मलानंद का शाब्दिक एवं व्यंजनात्मक भाव का स्पष्टीकरण अपेक्षित।
- **भाषा** – सरल, सहज, अंतर्मुखी भावों की अभिव्यक्ति एवं चित्रात्मकता।

11 क किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित :– 4+4 = 8 अंक

संवदिया की विशेषताएँ :–

- विश्वसनीयता
- संवेदनशीलता
- कर्त्तव्यपालन
- पूरे संवाद को यथावत प्रस्तुत करना

गांव वालों की अवधारणा :–

- कामचोर, निठल्ला और पेटू आदमी होना
- बिना मज़दूरी लिए संवाद पहुँचाना, औरतों का गुलाम होना

ख **चौधरी प्रेमधन के व्यक्तित्व के पहलू :–**

- **आकर्षक व्यक्तित्व** – कंधों पर बिखरे बाल, भव्यमूर्ति का–सा रूप देखकर वामनाचार्य जी का उन्हें 'मुगलानी नगरी' कहना।
- **रईसी प्रवृति** – उनकी हर अदा में रियासत और तबीयतदारी का टपकना।
- **उत्सव प्रेमी** – बसंत पंचमी, होली में नाचरंग–उत्सव
- **वचन–वक्रता** – बात की काँट–छाँटकर निराली, वक्रता दर्शाना, नौकरों के साथ सुनने लायक संवाद होना।

(कोई चार)

ग मुक्त उत्तर संभव, पक्ष या

विपक्ष में मौलिक विचार — 2

प्रतिपादन — 2

12 अंक विभाजन निम्न प्रकार है — 6 अंक

जीवनी	—	2
रचनाएं (कम से कम दो के नाम)	—	2
काव्यगत विशेषताएँ	—	2
(कोई दो)		6

- **विष्णु खरे**
- **जन्म** : छिंदवाड़ा मध्यप्रदेश। अंगेजी साहित्य में एम.ए.
- **कार्य** : उप–संपादक – दैनिक इंदौर–समाचार में, मध्यप्रदेश एवं दिल्ली में अध यापन कार्य। तत्पश्चात् सन् 1976–84 में साहित्य अकादमी में – उप सचिव, सन् 1985 में नवभारत टाइम्स में प्रभारी कार्य संपादक। अब स्वतंत्र लेखन व अनुवाद कार्य में रत।
- **रचनाएं** : पहला प्रकाशन : टी.एस.इलियट का अनुवाद–मरु प्रदेश और अन्य कविताएं 1960 से 1994 तक। एक सीमक्षा पुस्तक, आलोचना की पहली किताब 1983 में। विदेश कविताओं का हिंदी तथा हिंदी–अग्रेजी अनुवाद अत्याधिक किया।
- **काव्यगत विशेषताएं**
  - वर्तमान माहौल में स्वयं को असमर्थ पाते हुए भी ईमानदारों के प्रति अपनी सहानुभूति स्पष्ट रूप से रखना।
  - अतीत की कथा का आधार लेकर अपनी बात प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना। यथा जो एक व्यक्ति के लिए सत्य है वही शायद दूसरे के लिए सत्य नहीं है।
  - स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में परिवर्तित जीवन शैली–आपसी विश्वास, परस्पर भाईचारा और सामूहिकता के स्थान पर धोखाधड़ी एवं स्वार्थपरता के माहौल को रेखांकित करना।
  - बदलते हालात और मानवीय संबंधों में हो रहे निरंतर परिवर्तनों से सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करना।

अथवा

- **विद्यापति**

- **जन्म** : मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गांव में, जन्म काल के संबंध में प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं, बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और तर्कशीाल व्यक्ति, राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय आदि के प्रकांड पंडित।

- **रचनाएं** : संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) और मैथिली–तीन भाषाओं में रचनाएं कीं। 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'पुरुष परीक्षा', 'भू–परिक्रमा', 'लिखनावली' और 'पदावली'।

- **विशेषताएं**

  – पद लालित्य, मानवीय प्रेम और व्यावहारिक जीवन के विविध रंग इन पदों को मनोरम और आकर्षक बनाते हैं।

  – प्रेम और सौन्दर्य की अनुभूति बड़ी निश्छल एवं स्पष्ट है।

  – राधा कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम का चित्रण उनके मनोहरी रूपों में।

अथवा

- **भीष्म साहनी**

- **जन्म** : रावलपिंडी (पाकिस्तान), प्रारंभिक शिक्षा–घर पर, स्कूल में – उर्दू एवं अंग्रेजी का अध्ययन, लाहौर से – अंग्रेजी साहित्य में एम.ए., पंजाब विश्वविद्यालय से – पीएचडी, विभाजन के बाद–पत्रकारिता तथा इप्टा नाटक मंडली से जुड़े, कला एवं साहित्य के प्रति रुचि।

- **रचनाएं** : कहानी संग्रह – 'भाग्य रेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'वाङ्चू', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर', 'पाली', 'डायन' आदि। बालोपयोगी कहानियां – 'गुलेल का खेल'। उपन्यास – 'झरोखे', 'कड़ियां', 'तमस', 'बसंती', 'मय्यादास की माड़ी', 'कुंतो', 'नीलू नीलिमा नीलोफर' आदि। नाटक – 'माधवी', 'हानूश', 'कबिरा खड़ा बाजार में,' 'मुआवजे' आदि।

- **विशेषताएं**

  – समकालीन कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ का सूक्ष्म चित्रांकन।

  – छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग कर विषय को रोचक तथा प्रभावशाली बनाया।

  – संवादों के प्रयोग से वर्णन सरल और रोचक बना है। विशेषकर संस्मरण, अत्यंत सरस और पठनीय बन पड़े हैं।

अथवा

- **ब्रजमोहन व्यास**
- **जन्म** : इलाहाबाद में, संस्कृत का ज्ञान – पं.गंगानाथ झा एवं पं. बालकृष्ण भट्ट से, सन् 1921 से 1943 तक इलाहाबाद नगरपालिका के कार्यपालक अधिकारी बने, लीडर समाचार पत्र समूह के जनरल मैनेज़र रहे।
- **रचनाएं : जीवनी** – पं. बालकृष्ण भट्ट, महामना मदन मोहन मालवीय। **आत्मकथा** – मेरा कच्चा चिट्ठा। **अनुवाद** – जानकी हरण (कुमार दास कृत)
- **विशेषताएं**
  - वर्णन में यथार्थता और रोचकता ।
  - ईमानदारी : अपनी कमियों या चालाकियों को भी स्वीकार करना।
  - सरल सहन, भाषा प्रयोग।

13 क निम्नलिखित में से किन्हीं तीन के उत्तर अपेक्षित हैं। 3+3+3 = 9 अंक

अमुक पत्थर किस प्रकार की चट्टान या मिट्टी से, लावा से बना है। किस प्रकार के कण है। यानि, पत्थर की जाति – पत्थर का प्रकार जैसे – 1) इग्नियस, 2) ग्रेनाइट, 3) मेटामॉरफिक, 4) सैंडस्टोन, 5) सिलिका आदि।

ख – आधुनिक युग में लगातार बढ़ रहे उद्योगों के कारण फसलों, जलवायु में हो रहे परिवर्तन।

– हमारे रहन–सहन, जीवन–शैली ने भी वायुमंडल को प्रभावित किया है।

– अधिकतर यूरोपीय और अमेरिका के औद्योगीकरण के कारण दुनिया में उन्नति भी, दुनिया के लिए जान लेवा भी। सभ्यता भी, अपसभ्यता भी।

ग – ईर्ष्या का भाव।

– यह बात सहन न हुई कि भैरो के हाथ रुपए लग गए।

– पाप–पुण्य के विचार की निरर्थकता ।

घ – दस वर्ष की आयु में ही लेखक विश्वनाथ त्रिपाठी का एक संदुर स्त्री की ओर आकर्षण उनसे दस वर्ष बड़ी थी।

– स्मृतियों में सदैव उस सुंदर स्त्री का रहना।

– प्राकृतिक सौन्दर्य में भी उसके अस्तित्व की अनुभूति।

– बड़े गुलाम अली खां की ग़ज़ल में भी उसी स्त्री की व्याकुलता ।

14 — 'सूरदास' कहानी का नायक, दृष्टिहीन और गरीब । 6 अंक

— भीख मांगकर जीवनयापन, कुछ पूंजी एकत्रित कर पोटली में रखना।

— पड़ोसी भैरो की पत्नी पति से मार खा सूरदास की शरण में। अतः दुखी नारी की रक्षा।

— भावुक, संवेदनशील, चरित्रवान, नैतिक एवं शरणागत की रक्षा करने वाला।

— अनाथ बच्चों को पालना — ममता एवं कर्त्तव्य।

— आशावादी विचारधारा— 'किसी ने अगर हजार लाख बार हमारी झोंपड़ी जला दी तो वह भी हजार लाख बार झोंपड़ी बनाएगा।

प्रेरणा

— हर परिस्थिति में दूसरे की मदद

— अनाथ बच्चे का लालन—पालन

— दार्शनिक विचारधारा, आशावादी बनना

— शरणागत की रक्षा

— हानि या नुकसान होने पर भी पुनः उठ खड़े होने की हिम्मत आदि गुणों की प्रेरणा मिलती है।

अथवा

(4 विशेषताएं — 4 अंक +उदाहरण/प्रेरणा — 2=6)

- भूपसिंह पहाड़ी क्षेत्र का, दृढ़ निश्चयी, परिश्रमी
- भूस्खलन की बड़ी तबाही में माता—पिता, पत्नी, खेत, घर—बार खो देने पर भी पुनः घर बसाकर खेती करना।
- झरने का मुँह खेतों की ओर मोड़ देना
- पहाड़ों की ऊंचाई पर नया घर बसाकर उतरना—चढ़ना, दिनचर्या बन गई।
- सीधे खड़े पहाड़ों पर चढ़ाई करने में असमर्थ रूपसिंह और शेखर को भूपसिंह ने धैर्य, आत्मविश्वास, ताकत से पहाड़ों पर चढ़ा दिया।

प्रश्न-पत्र-संख्या 29/1

1 क अपठित गद्यांश के उत्तर :– 15 अंक

(i) गांधी जी ने व्यापक अर्थ में 'सत्य' शब्द का प्रयोग किया।

(ii) विचार में, वाणी में और आचार में निस्वार्थ भाव से सत्य का सच्चा स्वरूप है।

(iii) जो सत्य को उस विशाल अर्थ में समझ ले, उसके लिए कुछ और जानना शेष रहता। 2

ख – दृष्टि और सोच–विचार के भेद के कारण सत्य का बाह्य रूप भले ही भिन्न दिखाई देता है किंतु वास्तव में सत्य–सत्य होता है। 1+1 = 2

– परमेश्वर एक ही है पर हर आदमी को भिन्न दिखाई देता है।

– अतः एक के लिए जो सत्य तो दूसरे के लिए असत्य भी हो सकता है, इसमें घबराने की बात नहीं।

ग किसी को मारना, कुविचार, उतावलापन, मिथ्याभाषण, द्वेष, किसी का बुरा चाहना आवश्यक वस्तुओं पर कब्जा रखना हिंसा है। 2

घ सत्य का खोजी मन–वचन–कर्म से अहिंसा का मार्ग अपनाता है। निःस्वार्थ भाव से आगे बढ़ता है और ठोकर खाते ही संभल कर सीधे रास्ते चलने लगता है। 1+1 = 2

ङ – जो सत्य का खोजी है वह अहिंसा का मार्ग ही अपनाएगा। 1+1 = 2

– दोनों ही मन के भीतर के गुण हैं।

– किसे उल्टा कहें किसे सीधा–दोनों एक ही सिक्के के दो रुख हैं।

च – सत्य हरि की भक्ति की भांति एक तपश्चर्या है जिसमें स्वार्थ कामना नाम की कोई वस्तु नहीं होती। 2

– अहिंसा के मार्ग से हम सत्य तक पहुँच सकते हैं।

छ सत्य और अहिंसा/सत्य आदि अन्य कोई भी उपयुक्त शीर्षक 1

ज उतावली मिथ्या भाषण और द्वेष हिंसा है। 1

झ उपसर्ग–निः/निस्/वि

प्रत्यय – अक/क

एक उपसर्ग तथा एक प्रत्यय लिखने पर अंक पूरे दिन जाएं।

2 क आज की दुनिया ..... पसीज–पसीज 5 अंक

(i) प्रकृति के सभी रहस्यों पर मनुष्य ने विजय पा ली है। ½+½

(ii) मनुष्य ने अपनी बुद्धि द्वारा प्रकृत्ति के सभी तत्वों – पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि तक को जीत लिया है।

ख 'कहीं' कोई रुकावट शेष नहीं रही – कथन की पुष्टि में कवि ने तर्क दिया है कि आज मानव वायु, जल, तेज, वाष्प आदि देवता समान तत्वों की उपासना नहीं करता, अपितु उन्हें अपने वश में करके उनसे मन चाहा कार्य लेता है। 1

ग वैज्ञानिक प्रगति ने मानव को इतना स्वार्थी बना दिया है कि वह केवल बुद्धि का प्रयोग कर रहा है – उस का हृदय पक्ष अवरुद्ध हो गया है। वह प्रेम, करुणा, दया, क्षमा आदि मानवीय गुणों को छोड़ता जा रहा है। ½+½ = 1

घ प्रकृत्ति के सभी तत्व पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, वायु मनुष्य जीवन के कार्य करते हैं क्योंकि यही जीवन का आधार हैं और वैज्ञानिक ने भी इन्हीं तत्वों के प्रयोग के आधार पर उपलब्धियां भी प्राप्त की हैं। जैसे – 'वायरलेस' (बेतार के तार), 'मोबाइल', 'सेटलाइट', दूरदर्शन', 'रेडियो' आदि या कोई अन्य 1

ङ 'मोम–सी कोई मुलायम चीज़' संवेदनाएं हैं। बुद्धि की प्रगति आवश्यकता से अधिक हो गई है जिससे दया, करुणा, क्षमा आदि हृदय के भाव वैज्ञानिक प्रगति में कही पीछे छूट गए हैं। 1

अथवा

क (i) 'हम' के रूप में वीर सैनिक अपना परिचय दे रहे हैं

(ii) स्वातंत्र्योत्तर भारत रूपी सूर्य के वीर होने के कारण, वे अपने आपको 'नई किरण' कह रहे हैं।

ख स्वतंत्र भारत पर अपना सर्वस्व न्योछावर करना चाहता है क्योंकि स्वदेश की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का सर्वोपरि कर्त्तव्य है।

ग वीरप्रसू – वीर सैनिकों को जन्म देने वाली भारत भूमि को कहा गया है।

घ **भाव** : 'नर' अर्थात् वीर ओजस्वी योद्धा की प्रखर ताकत, किंतु मन में 'नारी' अर्थात् सुकोमल, करुणामयी भावनाएं प्रतिफलित थीं।

ङ (i) क्षमा (ii) दया (iii) करुणा (iv) अपनत्व

3 किसी एक विषय पर 400 शब्दों में निबंध लिखना अपेक्षित — 10 अंक

–	भूमिका	–	1 अंक
–	विषयवस्तु व उससे सुसंबद्ध प्रतिपादन	–	5 अंक
–	उपसंहार	–	1 अंक
–	भाषा शुद्धता	–	1 अंक
–	अभिव्यक्ति शैली	–	2 अंक
			10 अंक

4 – पत्र का आरंभ व समापन

	की औपचारिकता	–	2 अंक
–	विषयवस्तु का प्रतिपादन	–	2 अंक
–	भाषा शुद्धता	–	1 अंक
			5 अंक

5 (1) छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है। उसे आप आराम से और धीरे–धीरे पढ़ सकते हैं — 1×5 अंक

(2) उन्हें लंबे समय तक सुरक्षित रख सकते हैं और उसे संदर्भ की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।

(3) यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। इस माध्यम में आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं।

(4) मुद्रित माध्यमों का पाठक वही हो सकता है जो साक्षर हो और जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के जरिए एक विशेष स्तर की योग्यता भी हासिल की हो।

अथवा

सावधानियाँ :–

(1) **साफ–सुथरी और टाइप्ड कॉपी** : प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए। उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर, अंक आदि नहीं लिखने चाहिए जिन्हें पढ़ने में ज़बान लड़खड़ाने लगे।

(2) **डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग** : रेडियो में अखबरों की तरह डेडलाइन अलग से नहीं बल्कि समाचार से ही गुँथी होती है। समाचार में समय

संदर्भ का मसला भी महत्वपूर्ण है। संक्षिप्ताक्षर के इस्तेमाल में काफी सावधानी बरतनी चाहिए।

(3) यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है। इस माध्यम में आप गंभीर और गूढ़ बातें लिख सकते हैं।

(4) मुद्रित माध्यमों का पाठक वही हो सकता है जो साक्षर हो और जिसने औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के जरिए एक विशेष स्तर की योग्यता भी हासिल की हो।

6 क समाचार लेखन के 'छह ककार' : क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ? यानी क्या, कौन (किसके), कहां, कब, क्यों और कैसे। 5 अंक

ख **समाचार** : समाचार ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो और जिसका अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ रहा हो।

ग कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी लोकप्रियता को ध्यान में रखकर उन्हें अखबार में एक नियमित स्तंभ लिखने का दायित्व दे दिया जाता है।

घ वेबसाइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरु करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

ङ उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले लिखे जाते हैं फिर उसके बाद घटते क्रम में अन्य तथ्य और सूचनाओं को लिखा जा सकता है।

7 सप्रसंग व्याख्या अंक विभाजन 8 अंक

कवि तथा कविता का नामोल्लेख	–	½+½	
प्रसंग / पूर्वापर संबंध	–	1	
व्याख्या	–	4	8
विशेष, भाषा	–	2	

– कवि जायसी, 'बारहमासा' से उद्धृत

– प्रसंग – रानी नागमती की पूस मास में वियोगावस्था का चित्रण।

– पूस मास में जाड़े की अधिकता

– रजाई भी ठंड नहीं रोक पाती

– चकवी रात को बिछड़कर दिन में तो मिलती है परंतु नागमती का विरह उससे भी बढ़कर है क्योंकि रात–दिन विरह में बीतता है।

– विरह रूपी बाज दृष्टि गड़ाए है।

– शरीर विरह में गलकर शंख के समान हो गया है।

– हे प्रियतम! इस मरणासन्न अवस्था में ही आ जाओ और मुझ पंछी के पंख समेट लो।

- **विशेष**

– विरह का सुंदर वर्णन

– रूपक, अनुप्रास, अतिशयोक्ति अलंकार

अथवा

- कवि केदारनाथ सिंह, 'बनारस' से उद्धृत

- प्रसंग – बनारस में बसंत चुपके से धूल भरे बवंडर के साथ दस्तक देता है। लोगों में सुगबुगाहट दिखाई पड़ती है।

- व्याख्या

– बसंत के आगमन से चहल–पहल बढ़ गई है।

– दशाश्वमेध घाट पर लोग स्नान,पूजा–पाठ के लिए पहुंचे हैं। पानी के संपर्क में रहकर पत्थर जैसे कठोर हृदय भी कुछ मुलायम हो गए हैं।

– बंदर की आंखों में नमी और भिखारियों की आंखों में चमक है। भिखारियों के कटोरों में पैसे आने को बसंत का आगमन कहा है।

- विशेष

– लाक्षणिक प्रयोग

– बंदर कृतज्ञ हैं क्योंकि उन्हें चना–चबेना मिलता है।

– भिखारियों के कटोरों में बसंत का आना – सुंदर प्रयोग

– खड़ी बोली, सहज–सरल भाषा

8 **किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित** 3+3 = 6 अंक

क सत्य बाहरी नहीं भीतरी शक्ति है। इसे पहचानने के लिए हमें युधिष्ठिर जैसा संकल्प लेना होगा। सत्य की अनुभूति कभी–कभी हमारे मन में स्वतः होती है।

ख यह 'अकेला' दीप व्यक्ति का और पंक्ति समष्टि का प्रतीक है। व्यक्ति का समष्टि में विलय समाज के भी हित में है और व्यक्ति के भी। व्यक्ति की सार्थकता समाज में है।

ग राम अपराधी व्यक्ति पर भी क्रोध नहीं करते। भरत पर तो उनकी विशेष कृपा है। वे खेल में भरत के हार जाने पर भी उसे जिता देते हैं। उनका कोमल, स्नेह स्वभाव सब जानते हैं।

9 किन्हीं दो का काव्य – सौंदर्य अपेक्षित ! 3+3 = 6 अंक

भाव सौन्दर्य – 1½
3
शिल्प सौन्दर्य – 1½

क **भाव सौंदर्य**

- लक्ष्मण द्वारा पंचवटी के सौंदर्य और वहां की पवित्रता का वर्णन।
- पंचवटी के समीप आते ही दुखों का नष्ट हो आ जाना, जगत के प्राणियों में मृत्यु की अपेक्षा जीने की इच्छा का बलवती होना, योगियों की योग–साधना तीव्र हो आनंद की उच्चतम अवस्था को पा लेना आदि पंचवटी स्थान के महात्म्य का प्रभाव है।
- शिल्प सौंदर्य –

– उपमा, अनुप्रास और रूपक अलंकार।

– ब्रज भाषा, शांत रस, प्रसाद गुण।

– पंचवटी का मनोहारी चित्रण। 2

ख **भाव–सौंदर्य**

– प्रातःकालीन वातावरण का आकर्षक चित्रण।

– उषा रूपी सुंदरी अपने स्वर्णिम कलश से सुबह–सुबह समस्त सुख उँडेल देती है।

– रात भर जगने वाले तारे ऊँघने लगते हैं।

शिल्प–सौंदर्य

– उषा और तारों का मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास अलंकार।

– तत्सम शब्दावली–युक्त खड़ी बोली।

– प्रसाद व माधुर्य गुण।

ग **भाव–सौंदर्य**

– संसार की लूट–खसोट से पीड़ित व निराश लोगों में उचित व्यवस्था समाज में लाने का साहस दिलाया है।

– सर्वत्र फैले विषमता के विष को बाहर निकाल फेंककर, समता लाने व मानवीय संवेदनाओं से पृथ्वी को सींचने का आह्वान किया है।

शिल्प–सौंदर्य

– कवि का मानवतावादी दृष्टिकोण

– अनुप्रास, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास अलंकार

– लाक्षणिक प्रयोग

– छंदमुक्त कविता

10 गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या 6 अंक

लेखक व लेख का नाम – 1

पूर्वापर संबंध – 1

व्याख्या – 3

भाषा शुद्धता, विशेष – 1

स्वातंत्र्योत्तर भारत ..... ऐसा नहीं जान पड़ता

(i) लेखक – निर्मल वर्मा

लेख – 'जहां कोई वापसी नहीं'

– औद्योगीकरण के कारण मनुष्य और उसकी प्रकृति में संबंध विच्छेद।

• **व्याख्या**

– आजादी के उपरांत औद्योगीकरण के कारण प्रगति

– पाश्चात्य प्रभाव में नई योजनाएँ बनीं पर संस्कृति और प्रकृति के बीच संतुलन खो दिया।

– पश्चिमी देशों से शिक्षित शासकों ने भी देश विकास में मर्यादाओं का ध्यान नहीं रखा।

– मनुष्य, प्रकृति व संस्कृति के संतुलन की उपेक्षा

- विशेष

– अंधानुकरण का विरोध।

– भाषा सहज एवं सरल

अथवा

अभी भी मानव ..... पाठ पढ़ाते हैं

(i) लेखक – रामविलास शर्मा

लेख – 'यथास्मै रोचते विश्वम्'

- प्रसंग

– एक श्रेष्ठ साहित्यकार के सृजन कर्म का उल्लेख

- व्याख्या

– मनुष्य स्वातंत्र्योत्तर युग में भी जीवन संबंधों के पिंजरे में

– साहित्यकार आदर्शों से हटकर पिंजरे की तीलियों को मजबूत कर पराधीनता का पाठ पढ़ाए तो उसे धिक्कार है।

– ऐसे तथाकथित साहित्यकारों को लेखक ने फटकारा है।

- विशेष

– विचारात्मक शैली, तत्सम–तद्भव शब्द, भाषा भावानुकूल, सरल, स्पष्ट।

– परंपरावादी लेखकों पर करारा व्यंग्य।

11 किन्हीं 'दो' के उत्तर अपेक्षित है। 4+4 = 8 अंक

क 'दूसरा देवदास' कहानी में एक लड़की द्वारा 'मनसा देवी' पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प।

– 'संभव' नाम के लड़के की उस लड़की से छोटी–सी मुलाकात, हृदय में प्रेम अंकुर, बेचैनी, प्रेम के आकर्षण में बँध जाना।

– एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प उसकी इसी प्रेमातुर दशा का सूचक, लड़के का नाम जानने की प्रश्नभरी दृष्टि से देखना।

ख 'शेर' व्यवस्था का प्रतीक। व्यवस्था ही सत्ता है।

– जब तक उसके मतानुसार लोग चलते हैं वह चुप रहती है।

– जब कोई उसका विरोध करे तो वह शेर की भांति आक्रामक हो जाती है।

– व्यवस्था का भयानक रूप 'शेर' की तरह जब विरोधी स्वर को कुचलना होता है।

ग – बड़ी बहुरिया का अपनी बड़ी हवेली में, जो अब नाम मात्र की ही बड़ी थी, एकाकी, घोर दरिद्रता का जीवन बिताना।

– देवर–देवरानी ने उससे वास्ता न रखा, अकेलापन।

– मायके संदेशा भिजवाना चाहती हैं पर संवदिया के चले जाने पर मानसिक पीड़ा कि क्यों संदेशा भिजवाया।

– किसी कारण से संदेशा न पहुंचा तो राहत की सांस लेना अर्थात् मानसिक द्वंद्व से पीड़ित नारी।

12 अंक विभाजन निम्न प्रकार है – 6 अंक

जीवनी	–	2
रचनाएं (कम से कम दो)	–	2
काव्यगत विशेषताएं	–	2
(किंहीं दो की)		6

- **विद्यापति**

- **जन्म** : मधुबनी (बिहार) के बिस्पी गांव में, जन्मकाल के संबंध में प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं, बचपन से ही अत्यंत कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील व्यक्ति; राजा शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय आदि के प्रकाण्ड विद्वान (पंडित)

- **रचनाएँ** : संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) और मैथिली – तीन भाषाओं में रचनाएं कीं। 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'पुरुष परीक्षा', 'भू–परिक्रमा', 'लिखनावली' और 'पदावली'।

- **विशेषताएँ**

– पद–लालित्य, मानवीय प्रेम और व्यावहारिक जीवन के विविध रंग इन पदों को मनोरम और आकर्षक बनाते हैं।

– इन पदों में प्रेम और सौन्दर्य की अनुभूति बड़ी निश्छल एवं स्पष्ट है।

– राधा–कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक–प्रेम का चित्रण अनेक मनोहारी रूपों में किया है।

अथवा

- **रघुवीर सहाय**

- **जन्म** : लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में, शिक्षा–लखनऊ में, 1951 में अंग्रेजी में एम.ए. , 'प्रतीक' में सहायक संपादक रहे; 'कल्पना' एवं 'दिनमान' का संपादन; आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे; कविताओं का 'दूसरा सप्तक' में संकलन।

- **रचनाएँ** : 'सीढ़ियों पर धूप में; 'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हंसो हंसो जल्दी', 'लोग भूल गए हैं' और 'रघुवीर सहाय रचनावली (खण्ड़ों में)। साहित्य अकादमी – पुरस्कार – काव्य संग्रह – 'लोग भूल गए हैं' पर।

- **विशेषताएँ**

– अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से प्रयासपूर्वक बचते हैं।

– भयाक्रांत अनुभव की आवेगरहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है।

– मुक्त छंद के साथ–साथ छंद में काव्य रचना की है

– सामाजिक संदर्भों के निरीक्षण, अनुभव और बोध को कविता में वयक्त करते हैं।

अथवा

- **रामचंद्र शुक्ल**

- **जन्म** : उत्तर प्रदेश–बस्ती जिले–अगोना–गांव; शिक्षा–उर्दू–अंग्रेजी–फारसी; स्वाध्याय – संस्कृत, अंग्रेजी, बांग्ला, हिंदी। चित्रकला के अध्यापक–मिर्जापुर के मिशन हाई स्कूल में, हिन्दी शब्द सागर – सहायक संपादक, उच्चकोटि के आलोचक, इतिहासकार और साहित्य–चिंतक

- **रचनाएँ** : 'गोस्वामी तुलसीदास', 'जायसी ग्रंथावली', 'सूरदास', 'चिंतामणि' (चार भाग), 'हिंदी साहित्य का इतिहास', 'रस मीमांसा' आदि।

- **विशेषताएँ**

– भाषा अत्यंत प्रौढ़, प्रांजल, सजीव और भावानुकूल है।

– लेखन में विचारों की दृढ़ता, निर्भीकता और आत्मविश्वास की एकता मिलती है।

– अत्यन्त सारगर्भित, विचार प्रधान, सूत्रात्मक वाक्य–रचना उनकी गद्य–शैली की एक बड़ी विशेषता है।

अथवा

- **भीष्म साहनी**

- **जन्म** : रावलपिंडी (पाकिस्तान), प्रारंभिक शिक्षा–घर पर, स्कूल में – उर्दू एवं अंग्रेजी का अध्ययन, लाहौर से – अंग्रेजी साहित्य में एम.ए., पंजाब विश्वविद्यालय से – पीएचडी, विभाजन के बाद–पत्रकारिता तथा इप्टा नाटक मंडली से जुड़े, कला एवं साहित्य के प्रति रुचि।

- **रचनाएँ** : 'भाग्य रेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'वाङ्च', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर', 'पाली', 'डायन' आदि। बालोपयोगी कहानियां – 'गुलेल का खेल'। उपन्यास – 'बसंती', 'मय्यादास की माड़ी', 'कुंतो', 'नीलू नीलिमा नीलोफर' आदि। नाटक – 'माधवी', 'हानूश', 'कबिरा खड़ा बाजार में,' 'मुआवजे' आदि।

- **विशेषताएँ**

– किशोरावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के अपने अनुभवों को स्मृति के आधार पर शब्दबद्ध किया।

– छोटे–छोटे वाक्यों की सरल भाषा प्रयोग कर विषय को रोचक तथा प्रभावशाली बनाया।

– संवादों के प्रयोग से वर्णन सरल और रोचक बना है। विशेषकर संस्मरण, अत्यंत सरस और पठनीय बन पड़े हैं।

13 क किन्हीं 'तीन' के उत्तर अपेक्षित है – 3+3+3 = 9 अंक

– 'फूल' प्रकृति के उपहार, सुगंध–सौंदर्य, आनंद देने वाले सदैव आकर्षक रूप में

– दवा रूप भी – नीम के फूल, पत्ते

– गुलाब की पंखड़ियों से गुलाब जल आदि

ख – बरसात की झड़ी से मालवा के सभी नदी–नाले, तालाब–गड्ढे मटमैले, बरसाती पानी से लबालब भर जाते हैं।

– धरती हरी–भरी, खेतों में सोयाबीन, ज्वार, बाजरे की फसलें लहलहाती हैं।

– जनजीवन खुशहाल।

ग – गांव के लोगों से सूरदास और सुभागी के संबंध के बारे में सुनना।

– बदला लेना, ईर्ष्या, झोंपड़ी में आग लगाकर तथा पांच सौ से अधिक चाँदी के सिक्कों की पोटली चुरा कर भाग जाना।

– अपनी पत्नी और सूरदास के संबंधों के शक ने ईर्ष्या की आग जगाई।

घ – ट्रेनिंग लेकर भी बिना उपकरणों की सहायता से रूपासिंह सीधे पहाड़ पर चढ़ने में असमर्थ –

– विपरीत परिस्थितियों, प्राकृतिक आपदाओं को झेलकर भूपसिंह का मनोबल, शारीरिक बल कुछ और बढ़ गया।

– चढ़ने में असमर्थ रूपसिंह और शेखर को अपने मफलर को मजबूती से कमर में बांधकर पहाड़ों की ऊंचाई पर पहुंचा देना – ट्रेनिंग प्राप्त रूपसिंह को बौना कर देता है।

14 – पहाड़ी क्षेत्र का निवासी, दृढ़ निश्चयी, कर्मठ। 6 अंक

– विपरीत परिस्थितियों में भी पुनर्वास द्वारा सिद्ध करना–'मन के जीते जीत है'।

– भू–स्खलन की भयंकर घटना के उपरांत पुनः घर–गृहस्थी, खेती आरंभ करना, झरने का रुख बदल देना।

– पर्वतों पर चढ़ना–उतरना सहज प्रक्रिया बन गई।

प्रेरणा : जीवन में विपरीत परिस्थितियां आएँ तो भी नई राह निकाल लेना, आशावादी बनना, कर्मठ बने रहना, नकारात्मक विचारों से कोसो दूर, तन–मन, विचारों में परिस्थिति जन्य सकारात्मक सोच व निरंतर कर्मठ बने रहना।

अथवा

नेत्रों से अंधा, मन से भक्त, कर्मठ परंतु भीख मांगकर भी जीवन–निर्वाह सहज रूप से, झोपड़ी में आग लग गई, बूंद–बूंद जोड़ी धनराशि भैरों द्वारा लूट ली गई – चारों तरफ विपरीत परिस्थितियां पर आशावादी विचारधारा नहीं छोड़ी। 'मिठुआ' के द्वारा पूछे जाने पर सूरदास ने यही कहा – 'जितनी भी बार घर जलेगा हम नया बनाएंगे– सौ लाख बार जला तो सौ लाख बार बनाएँगे।'